Chapter 5

अध्याय-५

' रघुवंश दीपक ' की प्रबन्धात्मकता तथा महाकाव्यत्व

अध्याय-५

: रघुवंश दीपक की प्रबन्धात्मकता तथा महाकाव्यत्व :

प्रबन्ध काव्य जन-जीवन की सजीव एवं रसमयी अभिव्यक्ति के सशक्त तथा लोकप्रिय साधन कहे जा सकते हैं और संभवत: इस कारण प्राय: सभी भाषाओं के साहित्यों में इसकी दीर्घकालीन परम्परा प्राप्त होती है। मनुष्य के भावों, विचारों, आशा-आकांक्षाओं, रीति-नीतियों तथा उसके जीवन की नानाविध परिस्थितियों के व्यापक एवं प्रभावशाली चित्र तो इनमें मिलते ही हैं किन्तु ऐसे काव्यों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें मार्मिकता के साथ-साथ कथा-रस के अविच्छिन्न सन्निवेश का भी उपयुक्त अवसर कवि को मिलता है, जिसकी गुंजाइश इतर काव्य रूपों में एक प्रकार से कम ही रहा करती है। सामान्यत: पद्यमय कथात्मक साहित्य को प्रबन्ध काव्य कहा जाता है। १ जीवन की एक पक्षीय या सीमित तथा समग्र या व्यापक अभिव्यक्ति के विचार से आचार्यों ने इसके दो भेद माने हैं - खण्डकाव्य तथा महाकाव्य ।

उपर्युक्त भेदों के दृष्टिकोण से 'रघुवंश दीपक' महाकाव्य की कोटि की रचना है। प्राचीन आलंकारिकों और अर्वाचीन आलोचकों के एतद्विषयक विचारों का सम्यक् अनुशीलन करके डा० शम्भूनाथ सिंह ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि 'महाकाव्य मानव की कलात्मक प्रतिभा की वह सर्वोत्तम देन है जिसमें जातीय गुणों, सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियों और परम्परागत अनुभवों का पुंजीभूत रसात्मक रूप दिखाई पड़ता है, जो इसके समग्र जीवन का प्रतीक होता है और जिसके वाह्य स्वरूप में यद्यपि देश-काल के भेद के साथ निरन्तर परिवर्तन होता रहता है पर उसके आन्तरिक मूल्य और स्वाभाविक गुण शाश्वत और नित्य होते हैं ।२

१- देखिए- हिन्दी साहित्य कोश-संपादक डा० धीरेन्द्र वर्मा, भाग १ पृष्ठ ६२४ तथा डा० भगीरथ मिश्र- काव्यशास्त्र, तृतीय संस्करण, पृष्ठ ४६।

२- डा० शम्भूनाथसिंह, हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास प्रथमावृत्ति १६५६ ई० पृष्ठ १०७ शीर्षक- महाकाव्य का स्वरूप ।

इनकी दीर्घकालीन परम्परा तथा वस्तु और शिल्प विषयक मान्यताओं में युगानुरूप परिवर्तनों के तथा विशेषत: इनमें विद्यमान व्यापक जीवन चेतना को देखते हुए महाकाव्य को परिभाषित करना एक कठिन कार्य है। एतद्विषयक भारतीय और पाश्चात्य देशों की अवधारणाओं में तात्विक साम्य की बहुलांशता को स्पष्ट करने के पश्चात् वे लिखते हैं कि यदि महाकाव्य की परिभाषा देना आवश्यक ही हो तो उसकी यह परिभाषा की जा सकती है -

" महाकाव्य वह छन्दोबद्ध कथात्मक काव्यरूप है जिसमें क्षिप्र कथा-प्रवाह या अलंकृत वर्णन या मनोवैज्ञानिक चित्रण से युक्त ऐसा सुनियोजित, सांगोपांग और जीवन्त लम्बा कथानक होता है जो रसात्मकता या प्रभावान्विति उत्पन्न करने में पूर्ण समर्थ होता है, जिसमें यथार्थ, कल्पना या सम्भावना पर आधारित ऐसे चरित्र या चरित्रों के महत्वपूर्ण जीवनवृत्त का पूर्ण या आंशिक चित्रण होता है जो किसी युग के सामाजिक जीवन का किसी न किसी रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं, और जिनमें किसी महत्प्रेरणा से परिचालित होकर किसी महदुद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी महत्वपूर्ण गम्भीर अथवा आश्चर्योत्पाद और रहस्यमय घटना या घटनाओं का आश्रय लेकर संश्लिष्ट और समन्वित रूप से जाति विशेष और युग विशेष के समग्र जीवन के विविध रूपों, पदार्थों,मानसि अवस्थाओं अथवा नाना रूपात्मक कार्यों का वर्णन और उद्घाटन किया गया गया रहता है और जिसकी शैली इतनी उदात्त और गरिमामयी होती है कि युग युगान्तर में उस महाकाव्य को जीवित रहने की शक्ति प्रदान करती है। १

उपर्युक्त परिभाषा पर विचार करने से उसमें छन्दोबद्ध प्रवाहमय एवं सुसंगठित, सांगोपांग ,विस्तृत ,सजीवता एवं रसात्मकता से युक्त कथानक को छोड़कर शेष सभी बातें महाकाव्य की विशेषतायें ही कही जायेंगी जो कि प्राय: सर्वमान्य है। सुप्रसिद्ध समालोचक डा० नगेन्द्र ने प्राय: इन सभी विशेषताओं को पांच ऐसे मूलतत्त्व माना है जिनकेकि अभाव में किसी भी देश

१- डा० शम्भूनाथ सिंह - हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप - विकास, प्रथमावृत्ति १९५६ई० पृष्ठ १०८ - महाकाव्य का स्वरूप ।

अथवा युग की कोई रचना महाकाव्य नहीं बन सकती किन्तु उनका सन्निवेश होने पर परम्परागत शास्त्रीय लक्षणों की बाधा होने पर भी किसी भी कृति को महाकाव्य के गौरव से वंचित नहीं किया जा सकता। १ ये मूलतत्व इस प्रकार हैं - १- उदात्त कथानक, २- उदात्त कार्य अथवा उद्देश्य, ३- उदात्त चरित्र, ४- उदात्त भाव और ५- उदात्त शैली । इस प्रकार उदात्तता को महाकाव्य का प्राण बताकर उन्होंने उसे व्यापक अर्थवत्ता देकर माधुर्य का भी द्योतक माना है। २ इनमें उदात्त कार्य या उदात्त उद्देश्य भले वह राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक या आध्यात्मिक दृष्टिकोण से परिचालित हो,और उदात्त कथानक के अन्तर्गत भावों की उदात्तता या महानता अपने- आप आ जाती है। दूसरी बात शैलीगत उदात्तता के विषय में पाश्चात्य आचार्यों की मान्यता को स्वीकार करते हुए लिखा है । ३ कि उन्होंने ` महाकाव्यों की शैली का प्रधान गुण असाधारणता माना है। पर यह महाकाव्य का अनिवार्य अवयव नहीं है । इसके विषय में डा०शम्भूनाथ सिंह का मत विचारणीय है। उनके अनुसार ` महाकाव्य का कथानक चाहे सरल हो या जटिल,उसके चरित्र चाहे आदर्श हो या यथार्थ अथवा कल्पित, यदि उसका उद्देश्य महान् है उसका नायक महत्वपूर्ण या महान है औरउसमें समग्र जीवन की विविध परिस्थितियों और मानसिक दशाओं का चित्रण हुआ है तो शैली अलंकृत होते हुये भी अपने आप गम्भीर हो जायेगी। विकसनशील महाकाव्यों में अलंकृति नहीं होती पर उनकी शैली अलंकृत महाकाव्यों जैसी गम्भीर और उदात्त होती है। भामह ४ और दण्डी ५ ने महाकाव्यों में अग्राम्य शब्दों और अलंकृत शैली का व्यवहार करने की व्यवस्था दी है। पर सच बात यह है कि श्रम साध्य अलंकार तो साधन न रहकर साध्य बन जाता है। अत: शिशुपाल वध और नैषध चरित्र की शैली अतिशय

१-देखिये -डा० नगेन्द्र - कामायनी के अध्ययन की समस्यायें , पृष्ठ १६ शीर्षक -कामायनी का महाकाव्यत्व ।

२- देखिये - वही ।

३- देखिये - वही पृष्ठ २२ ।

४- सर्गबन्धो महाकाव्यं महतां च महच्च्यत् ।
अग्राम्यशब्द मर्थं च सालंकारं सदाश्रयम् ।। काव्यालंकार १।१६

५- अलंकृत संक्षिप्तम् रस भावनिरन्तरम् । काव्यादर्श १।१८

अलंकृत (असाधारण) होने के कारण वैसी उदात्त और गम्भीर नहीं है जैसी 'रामायण' 'रघुवंश' या 'कुमार सम्भव' की । ३ इससे स्पष्ट है कि अलंकृति शैली का आवश्यक अंग नहीं है। अरस्तू भी महाकाव्य के लिये अलंकृति के नियम का अनिवार्य निर्धारण नहीं स्वीकार करता। ४ उपर्युक्त विवेचन तथा तथ्यों के प्रकाश में यह निष्कर्ष निकलता है कि शैली अन्य तत्वों से इतनी मिली जुली है कि उसे अलग नहीं किया जा सकता और यदि उसे अलंकृति मात्र ही मानें तो उसका आग्रह महानता या उदात्तता में बाधक भी हो सकता है । वस्तुत: महाकाव्य का सम्पूर्ण रूप-विधान ही उसकी शैली है, जिस पर आगे विचार किया जा रहा है। अत: महाकाव्य की अनिवार्य कसौटी के रूप में वस्तु विन्यास का विस्तार और महानता या उदात्तता, महच्चरित्र की कल्पना या चरित्र की उदात्तता तथा उद्देश्य की उदात्तता इन तीन तत्वों को लिया जाना चाहिए । विशेषकर 'रघुवंश दीपक' जैसे महाकाव्य के सन्दर्भ में तो हमें यह और भी आवश्यक प्रतीत होता है ।

उपर्युक्त अन्तर्वर्ती तत्व के शिल्प विधान के कुछ बाह्य लक्षण भी महाकाव्य के मूल्यांकन के लिये आवश्यक है। सर्गबद्धता तथा सर्गों की संख्या एवं नामों का निर्धारण कृति के आदि और अन्त के औपचारिक निर्वाह (मंगलाचरण, वस्तु निर्देश और महात्म्य कथन विषयक) प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द का होना और उसके अन्त में छन्द परिवर्तन, सज्जन प्रशंसा, दुर्जन निन्दा, नायक के वंश की प्रशस्ति, सन्ध्या, सूर्योदय, रजनी , मृगया, शैल, वन, सागर आदि के वर्णन आदि रूढ़ियां मात्र हैं जो कि दो प्रकार की हैं - एक रचना विधान से संबंधित तथा दूसरे कथावस्तु से संबंधित। इनमें मुख्य बात शिल्प विधान तथा अपेक्षित वातावरण के निर्माण की है और इस उद्देश्य की पूर्ति उपर्युक्त बातों को न्यूनाधिक रूप से अपनाकर की जा सकती है। यदि इनकी उपेक्षा करके भी कोई समर्थ कवि उक्त उद्देश्य की पूर्ति में सफल हो सकता है तो विस्तृत और महान कथानक, महच्चरित्रों एवं उदात्त उद्देश्य से युक्त कृति निश्चित ही महाकाव्य कही जायेगी। यह उल्लेखनीय है कि रघुवंश दीपक को यदि महाकाव्य विषयक

३- डा० शम्भूनाथ सिंह - हिन्दी महाकाव्यों का स्वरूप विकास पृष्ठ ११६

४-

काव्य शास्त्रीय, परम्परागत मान्यताओं के आधार पर एक महाकाव्य न भी स्वीकार किया जाये तो भी वह कम से कम एक प्रबन्ध काव्य तो अवश्य ही है। प्रबन्ध काव्य के चार अवयव माने जाते हैं , कथा काव्य या प्रबन्ध काव्य के भीतर इतिवृत्त, वस्तु व्यापार वर्णन, भाव व व्यंजना और सम्वाद, उसके मुख्य अवयव हैं। १ उसकी कथावस्तु की दृष्टि से तीन बातें अनिवार्य है २ सबंध निर्वाह अर्थात् आधिकारिक तथा प्रासंगिक कथाओं का समुचित सगुम्फन, कथा के मार्मिक और गम्भीर स्थलों की पहचान, दृश्यों की स्थायगत विशेषता।

अत: पूर्व निर्दिष्ट विवेचन के आधार पर ` रघुवंश दीपक ` की प्रबन्धात्मकता तथा महाकाव्यत्व का निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत अध्ययन किया जा रहा है -

(१) कथानक

(अ) इतिवृत्त

(आ) कथाविस्तार तथा खण्डविभाजन

(इ) छन्दोबद्धता

(ई) सम्बन्ध निर्वाह ।

(२) चरित्र सृष्टि - जीवन के विविध और समग्र रूप का चित्रण ।

(३) वस्तु व्यापार वर्णन

(४) भाव व्यंजना - कथा के गम्भीर औरमार्मिक स्थलों की पहिचान ।

(५) शैली

(६) उद्देश्य

१- रघुवंश दीपक का कथानक

इस शीर्षक के अन्तर्गत शुद्ध इतिवृत्त, उसके विस्तार, समुचित खण्ड विभाजन, छन्दोबद्धता तथा सम्बन्ध निर्वाह जैसे मुख्य तत्वों पर विचार किया जायेगा ।

(अ) इतिवृत्त

कथानक प्राय: दो रूपों मेंप्राप्त होता है ।

१- अनुत्पाद्य २- उत्पाद्य

१-द्रष्टव्य-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ १४२ अष्टम् सस्करण।

रघुवंश दीपक का कथानक अनुत्पाद्य कोटि का है जिसका उपयोग सहजराम जी सेपूर्व राम कथा के प्राय: प्रत्येक कवि ने किया था। परम्परा से प्राप्त ऐसी कथावस्तु को ग्रहण करने के पश्चात् कवि के सम्मुख यह समस्या अवश्य थी कि उसमें परिवर्तन अथवा परिवर्द्धन किस आधार पर किया जाये क्योंकि कल्पना के लिये इस कथा में विशेष अवकाश न था। अपनी रुचि के अनुरूप कवि ने विभिन्न स्त्रोतों से प्रभूत सामग्री लेकर कथा के संगठन में सार ग्राहिणी प्रतिभा का समुचित उपयोग किया था। अपनी रचना को नवीनता प्रदान करने के दृष्टिकोण से उसने विभिन्न पौराणिक कथाओं को मूल कथा के साथ स्थान स्थान पर जोड़ा है। प्रासंगिक कथाओं की योजना से उसने सम्पूर्ण कथानक को अत्यधिक विस्तृत बना दिया है। प्रस्तुत प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में रघुवंश दीपक की कथावस्तु, उसके विस्तार तथा विभिन्न प्रासंगिक कथाओं के संयोजन आदि पर सविस्तार विचार किया गया है। यहां हम उसके इतिवृत्त संबंधी उन मुख्य मुख्य तथ्यों पर संक्षेप में विचार करना अधिक समीचीन समझते हैं जिनके समीकरण का प्रयोग कवि ने किया है। रघुवंश दीपक के कथानक का पर्यवसान सुखान्त हुआ है। कवि का उद्देश्य घटनाओं को किसी आदर्श परिणाम पर पहुंचाने का नहीं रहा है। वह एक महाकाव्य है, अत: उसके कथानक में मानव जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। कवि ने किसी न्याय नीति की दृष्टि से आग्रह पूर्वक सत् असत् का परिणाम दिखाकर शिक्षा प्रदान करने का प्रयास नहीं किया और न किसी औचित्य के प्रतिपादन के लिये अस्वाभाविकता का ही सहारा लिया है। जीवन और जगत की सम-विषम सभी प्रकार की परिस्थितियों में घटना चक्र के अन्तर्गत जीवन दशाओं और मानव संबंधों की अनेकरूपता को स्वाभाविक ढंग से अभिव्यक्त करने के लिये सहजराम जी ने राम के जीवन का एक पूर्ण दृश्य प्रस्तुत किया हैजिसमें मानवोचित चरित्र की सृष्टि करके उन्होंने उनके जीवन में आने वाली सुख, दुख, सम-विषम सभी प्रकार की परिस्थितियों को उद्घाटित किया है। `रघुवंश दीपक' के इतिवृत्त में जीवन की ऐसी बहुत सी दशाओं को गुम्फित किया गया है जिनमें मानव हृदय के भिन्न भिन्न भाव सहज रूप से व्यक्त हो सके हैं।

इतिवृत्तात्मकता में रसानुकूल परिस्थितियों तक पाठक को पहुंचाने के लिये घटनाओं की सम्बद्ध शृंखला का स्वाभाविक क्रम आवश्यक होता है तथा उसमें नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश होना चाहिए जिससे उसमें नीरसता न आ सके । इस दृष्टि से जब हम 'रघुवंश दीपक' के इतिवृत्त पर विचार करते हैं तो हमें दिखाई देता है कि कवि ने जन्म से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक की समस्त घटनाओं को राम के जीवन से सम्बद्ध कर उनमें रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगों का समावेश किया है। राम जन्म के मधुर प्रसंगों से युक्त कवि ने अपनी रचनायें उनके बाल्यावस्था, विवाह, वनगमन, वनवास काल मेंपत्नी के हरण पर उनका शोक संतप्त जीवन ,सीता को रावण के बंधन से मुक्त करने के लिये उनके संघर्ष मय जीवन तथा युद्ध की घटनाओं की एक शृंखला बद्ध योजना हमारे हृदय में सुख, दुख ,आशा, निराशा एवं संघर्ष के भावों को व्यक्त कर इन प्रसंगों के माध्यम से रसात्मक अनुभव कराने में सफल होते हैं । ऐसे प्रसंगों का विस्तृत विवेचन उसकी सफल असफलता की दृष्टि से आधिकारिक कथा तथा प्रासंगिक कथाओं के सगुम्फन तथा मार्मिक स्थलों की पहिचान पर विचार करते समय करेंगे । यहां उनका उल्लेख मात्र ही पर्याप्त होगा।

' रसानुकूल परिस्थिति तक पाठक को पहुंचाने के लिये बीच बीच में घटनाओं के सामान्य कथन या उल्लेख मात्र को ही शुद्ध इतिवृत्त १ माना गया है। रघुवंश दीपक में ऐसे सामान्य कथन स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं । उदाहरणार्थ निम्नांकित चौपाई देखी जा सकती है -

आगे जाइ बिलोकेउ रामा । तेज पुंज प्रकाश मुनि नामा।।२

इसी प्रकार दूसरा उदाहरणार्थ निम्नांकित दोहे में देखा जा सकता है -

दोहा- अंध कबन्धहिं दीन्ह गति, कृपासिन्धु रघुनाथ ।
अनुज सहित आगे चले, कटि निषंग धनु हाथ ।। ३

१- आचार्यरामचन्द्र शुक्ल - जायसी ग्रन्थावली पंचम संस्करण पृष्ठ ७०
२- रघुवंश दीपक - अरण्य काण्ड दोहा ११३ से पूर्व की चौपाई
३- रघुवंश दीपक - अरण्य काण्ड दोहा - १०६

उपर्युक्त उदाहरण की ही भाँति अन्य उदाहरणार्थ कवि के सामान्य कथन के द्वारा इतिवृत्त को गतिमान बनाने की योजना से संबंधित देखे जा सकते हैं जिनमें आगे की घटनाओं की सूचना मात्र प्राप्त होती है और रसानुकूल परिस्थिति तक पाठक सरलता से पहुँच जाता है। रघुवंश दीपक के इतिवृत्त का सफल पक्ष हम लक्ष्य कर चुके हैं । अब उसके दुर्बल पक्ष का संकेत भी आवश्यक प्रतीत होता है। प्रासंगिक कथाओं के अति विस्तृत कलेवर से इतिवृत्त के सहज प्रवाह में बाधा उत्पन्न होती है। रघुवंश दीपक में आने वाली ऐसी कथायें निम्नलिखित है -

' प्रह्लाद चरित्र, हनुमान जन्म कथा तथा बाल लीला, भगवान शंकर का पार्वती तथा गणेशादि सहित राम दर्शन हेतु अयोध्या आगमन तथा पार्वती मोह कथा, काम वन का विस्तार सहित वर्णन, गंगा जन्म कथा, सिन्धु मन्थन -मोहिनी कथा, सिंह उद्धार तथा ब्राह्मण की कथा, कान्य कुब्ज ब्राह्मण मिलन प्रसंग, यमराज व सत्यवती कथा, दुंदुभि दैत्य कथा, अंजनी माता का मिलन प्रसंग वशिष्ठ मोह, अवध महात्म्य , सरयू जन्म कथा लावण्य सुर वध आदि। ये ऐसी कथायें है जिनका आधिकारिक कथा के साथ समुचित सम्गुम्फन नहीं हो पाया है। अतः यह कहा जा सकता है कि इन्हें या तो छोड़ा जा सकता था या फिर संक्षिप्त कर काम चलाया जा सकता था। इन कथाओं के कारण प्रबन्ध में नीरसता, अकृत्रिमता तथा विश्रृंखलता आ गई है। हम इस बात की ओर संकेत कर चुके हैं कि कवि का पौराणिकता की ओर विशेष झुकाव होने के कारण ' रघुवंश दीपक ' में प्रासंगिक कथाओं की भरमार हो गई है। इसके परिणामस्वरूप कवि की इस रुचि ने सम्पूर्ण ग्रन्थ को पौराणिक कथाओं की प्रदर्शिनी सा बना दिया है - एक सुष्ठु प्रबन्ध या महाकाव्य के आवश्यक अंग के रूप में इनकी योजना नहीं हो पायी है ।

(आ) <u>कथाविस्तार तथा खण्ड विभाजन:</u>

' रघुवंश दीपक ' के कथा विस्तार का विस्तृत परिचय हम पूर्ववर्ती अध्याय में प्राप्त कर चुके हैं । प्रस्तुत प्रबन्ध में आलोच्य ग्रन्थ की कथावस्तु से संबंधित स्वतंत्र अध्याय की व्यवस्था की गई है। अस्तु कथा विस्तार के संबंध में इस स्थान पर केवल इतना ही संकेत करना उचित होगा कि ग्रन्थ में मूल कथा के साथ जोड़ी गई प्रासंगिक कथाओं में सुनियोजित विकास क्रम नहीं दिखाई पड़ता और कथा का प्रत्येक भाग पूरी कथा के अनुपात में बहुत लम्बा दिखाई देता है ।

उदाहरणार्थ प्रह्लाद चरित्र तथा हनुमान जन्म एवं बाल लीला की कथायें देखी जा सकती हैं । प्रसंगों की विश्रृंखलता के कारण कथानक में महाकाव्योचित कार्यान्विति नहीं दिखाई पड़ती। ग्रन्थ का औपसंहारिक भाग भी बिखरा हुआ तथा आदि भाग में जिस कार्यावस्था का विस्तार किया गया है उसका अंतिम भाग से कार्य कारण संबंध नहीं स्थापित होसकता और कार्यसिद्धि अथवा फलागम के पश्चात् भी कथा चलती रहती है ।

' रघुवंश दीपक ' का कथानक सात काण्डों में विभाजित है जिन्हें सर्ग माना जा सकता है। प्राचीन भारतीय आचार्यों में आचार्य विश्वनाथ ने महाकाव्य में कम से कम आठ सर्गों का होना अनिवार्य माना है पर भामह, दण्डी, रुद्रट आदि अन्य आचार्यों ने सर्गों की कोई निश्चित संख्या नहीं निर्धारित की है। सर्गबद्धता और क्षिप्तता अनिवार्य माने गये हैं । ~~अतः~~ इस आधार पर 'रघुवंश दीपक में काण्ड विभाजन को दोषपूर्ण नहीं माना जा सकता । ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने इस दिशा में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी का अनुगमन किया है। रघुवंश दीपक के सातों काण्ड परस्पर निबद्ध हैं यद्यपि आकार में समान नहीं है । प्रथम (बालकाण्ड), द्वितीय (अयोध्याकाण्ड) तथा अन्तिम (उत्तरकाण्ड) आकार में पर्याप्त बड़े हैं जब कि मध्य के काण्ड इनकी अपेक्षा कृत छोटे हैं । जिस प्रकार आलोचकों ने मानस के सर्ग विभाजन को, जो रघुवंश दीपक का सा ही है, शास्त्रीय महाकाव्यों की शैली के अनुसार नहीं, इतिहास पुराण की शैली ~~के अनुसार नहीं, इतिहास पु~~ का माना है। १ उसी प्रकार आलोच्य ग्रन्थ के संबंध में भी यही मत निर्धारित कर सकते हैं कि उसका काण्ड विभाजन पुराण शैली पर हुआ है ।

(इ) छन्दोबद्धता :

आचार्य हेमचन्द्र ने महाकाव्य में अर्थानुरूप छन्द योजना को अनिवार्य माना है। २ सर्गों के मध्य प्रसंगानुसार छन्द परिवर्तन को महाकाव्योचित स्वीकार किया है। अन्य आचार्यों ने प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द और उसके अन्त में

१- देखिये - डा० शम्भुनाथ सिंह का कथन- हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास प्रथमावृत्ति पृष्ठ ५४८ शीर्षक राम चरित मानस का महाकाव्यत्व ।

२- आचार्य हेमचन्द्र काव्यानुशासन अध्याय -८

भिन्न छन्द प्रयुक्त हो, तथा किसी एक सर्ग में अनेक छन्दों के प्रयोग की व्यवस्था की है। 'रघुवंश दीपक' में कवि द्वारा प्रस्तुत छन्दोबद्धता आचार्य हेमचन्द्र के मत के अनुरूप पड़ती है। यहां यह भी संकेत करना आवश्यक प्रतीत होता है कि हो सकता है कि उसने इस संबंध में भी अपने प्रेरक महाकवि तुलसीदास जी का ही अनुगमन किया हो क्योंकि 'रघुवंश दीपक' तथा रामचरित मानस में प्रयुक्त छन्द तथा उनके क्रम में पूर्ण साम्य है। 'मानस' में प्रत्येक काण्ड में अर्थानुरूप अनेक छन्दों का प्रयोग मिलता है यद्यपि यह छन्द परिवर्तन जल्दी जल्दी नहीं हुआ। इसी प्रकार रघुवंश दीपक में भी कवि ने प्रत्येक काण्ड में अर्थानुरूप अनेक छन्दों का प्रयोग प्रसंगानुसार किया है। मात्रिक छन्दों में चौपाई, दोहा, सोरठा, हरिगीतिका, तोमर आदि तथा वार्णिक छन्दों में अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, त्रोटक भुजंग प्रयात, मालिनी, वसंत तिलका, शार्दूल विक्रीड़ित छन्दों का प्रयोग रघुवंश दीपक मेंमिलता है। चौपाई, दोहा मुख्य छन्दके रूप में प्रयुक्त हुए हैं जब कि अन्य छन्दों का प्रसंगानुसार परिवर्तन हुआ है। प्रारम्भ में प्रत्येक आठ चौपाई केबाद एक या दो दोहों का प्रयोग मिलता है किन्तु ग्रन्थ में सर्वत्र इस क्रम का पालन नहींकिया गया और किसी किसी प्रसंग में ६, १०, १३, १६, १७ चौपाइयों के बाद कोई अन्य छन्द तथा बाद में एक या दो दोहे मिलते हैं। छन्दों के प्रयोग में जो विशिष्ट बात 'रघुवंश दीपक' में दिखाई देती है वह यह कि प्रत्येक काण्ड का अन्त अवश्य ही दोहे से हुआ है।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि 'रघुवंश दीपक' में महाकाव्योचित छन्दोबद्धता विद्यमान है और कवि इस प्रयोग में सफल रहा है क्योंकि छन्दपरिवर्तन के कारण या तो भावोत्कर्ष हुआ है या फिर कथा में गति शीलता आई है। इस संबंध में विस्तृत विचार आलोच्य ग्रन्थ के कला सौष्ठव से संबंधित अध्याय में करेंगे।

(ई) सम्बन्ध निर्वाह :

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रबन्ध काव्य में संबंध निर्वाह को अत्यधिक महत्वपूर्ण विशेषता मानी है। १ प्रबन्ध काव्य में आधिकारिक कथा के साथ प्रासंगिक कथाओं के सगुम्फन तथा उनके पूर्वा-- पर संबंध निर्वाह से ही उसके सहज

१- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल -- जायसी ग्रन्थावली पंचम संस्करण पृष्ठ

प्रवाह तथा गति शीलता में बाधा नहीं उत्पन्न होती अन्यथा सारा कथानक बिखरा हुआ नीरस सा प्रतीत होने लगता है।

'रघुवंश दीपक' की कथावस्तु पर विस्तृत विचार करते समय हमने यह स्पष्ट रूप से लक्ष्य किया है कि मुख्य कथा (आधिकारिक कथा) के प्रासंगिक कथाओं के सगुम्फन में कवि असफल रहा है। प्रासंगिक कथाओं के अति विस्तृत कलेवर ने आधिकारिक कथा की गति को बाधित किया है और उनमें वर्णित वस्तु तथा पात्रों के असाधारण चारित्रिक उत्कर्ष के कारण मुख्य कथा की सहज गति तथा उसकी धारावाहिकता में व्यवधान उपस्थित हो गया है। कथा के वे विराम जो उसमें रसात्मकता की वृद्धि के लिये सहायक सिद्ध हो सकते थे, व्यर्थ ही उबा देने वाले सिद्ध होते हैं। इन प्रासंगिक कथाओं में प्रह्लाद चरित्र,हनुमान जन्म कथा, गंगा जन्म कथा, सिन्धु मंथन के समय भगवान विष्णु का मोहनी रूप धारण, अज मंत्री को नेत्रदान, अहिल्या जन्म, विवाह, शाप तथा उद्धार वर्णन सिंह उद्धार तथा ब्राह्मण की कथा, चित्रकूट में कान्य कुब्ज ब्राह्मणों का राम से मिलने की कथा, अनुसूइया द्वारा सीता को यमराज-सत्यवती कथा वर्णन,विराध की कथा, कबन्ध का जीवन वृत्त, दुदुम्भि राक्षस कथा, रावण वध के पश्चात् अयोध्या लौटते समय श्री राम का का हनुमान की माता अंजनी से भेंट की कथा, सरयू जन्म तथा अवध महात्म्य वर्णन , ऐसी प्रासंगिक कथायें हैं जिनके विस्तार ने सम्पूर्ण आधिकारिक कथा को आच्छादित कर लिया है। एक के बाद दूसरी कथा की योजना ने सम्पूर्ण काव्य मे पाठक को रसदशा तक पहुंचने में पर्याप्त बाधा खड़ी की है। प्रासंगिक कथाओं की योजना करते समय कवि का ध्यान अपनी पौराणिक जानकारी तथा बहुज्ञता के प्रदर्शन की ओर अधिक दिखाई देता है, आधिकारिक कथावस्तु को नया मोड़ प्रदान करने अथवा उसकेगति प्रदान करने की ओर कम। 'रघुवंश दीपक' की प्रासंगिक कथाओं के विस्तृत वृतान्त असम्बद्ध तथा ऊपर से थोपे हुये प्रतीत होते हैं। कवि को किसी एक कथा का वर्णन करते करते सहसा दूसरी कथा स्मरण हो आती है और वह आधिकारिक कथा को भूलकर किसी अन्य कथा का विस्तार खड़ा कर देता हूं। इस प्रकार की अवान्तर कथाओं के नियोजन में कवि की उपदेशात्मक प्रवृत्ति परिलक्षित होती है जो उसकी संप्रेषण कला को बाधित करती है। 'रघुवंश दीपक' में कवि पूर्वापर संबंध

की रक्षा नहीं कर सका जिससे सारी कथा में विश्रृंखलता आ गई है ।

इस प्रकार सबंध निर्वाह में कवि की असफलता 'रघुवंश दीपक' के महाकाव्यत्व के सम्मुख प्रश्न चिन्ह बनकर उपस्थित हो जाती है जिसके उत्तर में हमें यह विवश होकर कहना पड़ता है कि हमारा आलोच्य कवि प्रबन्ध-सौष्ठव में असफल रहा है ।

२- चरित्र सृष्टि :

महाकाव्य में एक निश्चित उद्देश्य और निर्धारित योजना के अनुसार पात्रों की सृष्टि की जाती है। कवि पात्रों के माध्यम से समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक,सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की व्याख्या करता है तथा मानव जीवन की शाश्वत मान्यताओं के अनुरूप, समस्त समाज को गहराई तक प्रभावित करने के लिये चरित्र सृष्टि करता है। इस प्रकार वह एक और युगीन जन मानस को व्यक्त करने का प्रयास करता है और दूसरी ओर जातीय चेतना केजीवन्त प्रवाह को गति तथा अखण्डता प्रदान करता है। कोई भी काव्य केवल समकालीन युगबोध की अभिव्यक्ति मात्र से कालजयी नहीं बन सकता जब तक उसमें मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों तथा मानवीय चेतना से सम्पृक्त जीवन सत्य को उद्घाटित तथा परिभाषित नहीं किया जाता। महाकाव्य में पात्रों के माध्यम से जीवन के विविध पक्षों, रूपों और अवस्थाओं का सर्वांगीण चित्रण किया जाता है। वीरता, प्रेम ,शोक, विस्मय, वात्सल्य, वैराग्य, क्षमा, दया औदार्य, लोकानुरक्ति, दीनता और धर्म प्रेम, राजनीति आदि जीवन के विविध भाव तथा पक्ष महाकाव्य के चरित्रों के माध्यम से उद्घाटित होते हैं।वस्तुत: काव्य मेंचरित्र सृष्टि कवि की कल्पना शक्ति और काव्य प्रतिभा की परिचायक होती है ।

'रघुवंश दीपक' में चरित्र सृष्टि सबंधी कवि की कल्पना, काव्य प्रतिभा तथा एतद्विषयक मान्यताओं एवं पात्रों के चरित्र चित्रण पर प्रस्तुत प्रबन्ध में एक स्वतंत्र अध्याय के अन्तर्गत विस्तार सहित विचार किया गया है। अस्तु अनावश्यक विस्तार से बचने के लिये यहां केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि कवि सल्जराम जी ने परम्परा से प्राप्त रामकथा के पात्रों में मानव जीवन की विविध भूमिकाओं को चित्रित किया है। साथ ही राम और रावण के चरित्र समकालीन युग जीवन को अभिव्यक्त करने में सहायक हुये हैं । भरत , लक्ष्मण, हनुमान, सीता

कुम्भकरण, मेघनाद आदि पात्रों में मानव जीवन की भिन्न भिन्न परिस्थितियों का सन्निवेश कर अपने महदुद्देश्य की प्राप्ति का प्रयास किया है। रघुवंश दीपक के पात्र इसी लिये अधिक जीवन्त तथा स्वाभाविक प्रतीत होते हैं। राम के चरित्र में जिस आदर्श मानव तथा महान लोक नायक की परिकल्पना को साकार करने का प्रयास किया गया है उसमें कवि पूर्णत: सफल होता हुआ दिखाई देता है। संसार के किसी भी देश के साहित्य में आदर्श मानव जीवन की भी जो कल्पना की जा सकती है उसका पूर्ण समन्वित रूप हमें गोस्वामी तुलसीदास जी के राम में प्राप्त होती है। सहजराम जी ने गोस्वामी तुलसीदास जी का ही अनुसरण करते हुये राम के चरित्र में विश्वमानव की आदर्श कल्पना को साकार करनेका प्रयास किया है जिसमें वह सफल हुआ है, यह कहने में संकोच नहीं होता।

३- वस्तु व्यापार वर्णन :

आचार्यों ने मानव जीवन के विविध पक्षों, मानसिक दशाओं, बाह्य परिस्थितियों और मानवीय संबंधो केअधिक से अधिक अवयवों कोमहाकाव्य में सन्निविष्ट करने के लिये वस्तुव्यापार वर्णन को महत्वपूर्ण माना है। प्रबन्ध काव्य मे वस्तु व्यापार वर्णन के निम्नांकित दो रूप मिलते हैं। १

(१) वस्तुओं की संश्लिष्ट योजना द्वारा बिम्ब ग्रहण कराने का प्रयास।

(२) वस्तुओं के अलग अलग नाम परिगणन द्वारा अर्थ ग्रहण कराने का प्रयास।

रघुवंश दीपक में वस्तु वर्णन के उपर्युक्त दोनो रूप मिलते हैं जिनमें वस्तु व्यापारों और जीवन दशाओ के वर्णन इतने अधिक हैं कि उनमें से प्रत्येक का उदाहरण प्रस्तुत करना अनावश्यक विस्तार होगा। यहां कुछेक उदाहरणों द्वारा अपनी बात को पुष्ट को करने का प्रयास ही समीचीन कहा जायेगा। इनमें से सामाजिक ,राजनीतिक, धार्मिक व्यवहारो तथा उनसे सम्बद्ध कार्यों में सन्तानोदय, नामकरण, विवाह, बारात ,दहेज ,लौकिक रीति, रिवाज, राज्याभिषेक, सेना प्रस्थान, मंत्रणा, आक्रमण, दूतत्व, युद्ध, नायक का अभ्युदय, राज्य वर्णन, प्रतिनायक का वैभव तथा ऐश्वर्य वर्णन, राजनीतिक षड्यंत्र, कूटनीति दौत्य संबंध तथा कार्यवर्णन, यज्ञादि, देवपूजा वर्णन मुख्य हैं। इसी प्रकार रूप चित्रण में

१- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- जायसी ग्रन्थावली पंचम संस्करण भूमिका पृष्ठ ७६

नखशिख वर्णन, तथा मानसिक दशाओं और भावनाओं के वर्णन में रति, हास, क्रोध ,उत्साह, भय, शोक, जुगुप्सा, निर्वेदादि स्थायी भावों के चित्रण एवम् दास्य, सख्य, वात्सल्य, श्रद्धा, भक्ति आदि का वर्णन बड़े विस्तार के साथ मिलता है। देश काल और वातावरण में नगर वर्णन, देश वर्णन, राज सभा, राजभवन, अन्त:पुर, शयनागार, बाजार का वर्णन भी मिलता है। वन, सागर, नदी ,उपवन, सरोवर, पशुपक्षी , वृक्ष, लतायें गुल्म, घोड़ा,शस्त्र, भोजन के विविध प्रकारादि विभिन्न वस्त्र, वेश, आमोद प्रमोद, आभूषण, शिशु क्रीड़ा के विस्तृत वर्णन मिलते हैं । ऐसे वर्णनों में उपर्युक्त दोनों ही रूप मिलते हैं ।

१- संश्लिष्ट वस्तु वर्णन

मानवीय सम्वेदना तथा भावदशाओं के वर्णन में इस पद्धति को स्वीकार कर कवि ने वस्तु अन्वेषण की सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। ऐसे संश्लिष्ट वस्तु वर्णनों में से एक दो का परिचय प्राप्त करना हमारे कथन की पुष्टि के लिए पर्याप्त होगा । श्रीराम की बाल क्रीड़ा वर्णन में कवि ने प्रारम्भ से ही वातावरण की सृष्टि कर जो भाव पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है, वह इसप्रकार है -

दोहा - देखत चंद अमन्द मुख, जननी हृदय पयोधि ।
उमड़ो सुख संदोह जल, सके न कोउ अवरोधि ।।
काम कोटि शोभा अपहरहीं । कनक प्र्यंक प्रकाशित करहीं ।।
भुवन विभूषण भूपति छौना। किलकहिं निरखि विलोकि खिलौना।।
जानु पाणि मणि मय अंगनाहीं । विहरति रघुपति चारिहु भाईं ।।
चटुआ चारु कलित कर लीन्हें । कठुला कण्ठ डिठौना दीन्हें ।।
परहि पंक पावक कर धरहीं । तजहिं साथ मातुमन डरहीं ।।
श्याम ब गात तन भूषण भूरी । ग्रन्थित सुमन लटुरिया करी।।
लरहिं परस्पर चारिहु भाईं। परहिं भूमि तन रज लपटाईं ।।
मर्क कूजत कटि किंकिणि कमनीया। झुनुक भुनुक कर पग पैंजनिया।।
कलबल मुखर तोतरी बतियां । कहि मृदु मधुर निकारहिं दतियां ।।
निज प्रतिबिम्ब बिलोकहिं वारी। तर्जहिं ताहि बांधि चुचुकारी ।।
तिमि तेहि देखि विशेष डराहीं । रुदन करत मुख सदन पराहीं ।।
पायस पानि बुलावत कागहिं । आवत निकट मातु पहं भागहिं ।। १

१- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा १३७ तथा १३६ के मध्य की चौपाइयां ।

राजपुत्र होकर भी राम बालक ही थे। अत: सामान्य बालक की बाल सुलभ क्रीड़ाओं से युक्त वर्णन में भी राज-वैभव की झलक स्वाभाविक ही कहीं जायेगी। सम्पूर्ण वर्णन से एक बिम्ब स्पष्ट हो जाता है।

दूसरा प्रसंग जनकपुर का है। महर्षि विश्वामित्र सहित श्रीराम अपने बन्धु लक्ष्मण के साथ सीता स्वयम्बर में भाग लेने के लिये जनकपुर के राजमार्ग तथा गलियों और बाज़ारों से होकर जा रहे थे। जनकपुर वासी उनके अलौकिक सौन्दर्य की चर्चा पहले ही सुन चुके थे। अत: उनकी सौन्दर्य तथा रूप माधुर्य को अतिनिकट से अपनी ही आंखों देखने के लिए लालायित हो उठे। सारा नगर राम,लक्ष्मण के अनिंद्य सौन्दर्य से विमोहित हो उठा। कवि ने इस अवसर का वर्णन इतने प्रभावोत्पादक ढंग से किया है कि सम्पूर्ण चित्र साकार हो उठता है। चौबीस चौपाइयों तथा तीन दोहों के मध्य वर्णित यह दृश्य बड़ा ही आकर्षक तथा मनोज्ञ बन गया है, जो इस प्रकार है -

आगे गवन कीन्ह मुनि धारी। पाछे राम लषण दोउ वीरा।
भयो कुलाहल बालक वाया। धाये सब तजि तजि गृह काया।।
तन्य लाज कुल कानि विहाईं। जैा जै-सेहि तैसेहि उठि धाईं।।
उमगेहु मनहुं पयोनिधि भारी। पुर पूरब विधु बदन निहारी।।
कोउ अंजन दृग अंजित कीन्हे। देखन चली शलाका लीन्हे।।

दोहा- जावक देत प्रसाधिका, चरण सरोरुह वाम।
झपटि झरोखे को चली, झांकत कर अभिराम।।

कोउ गूंथत मुक्तामनि माला। सूत शेष रह चली उताला।।
पाक भवन कोउ व्यंजन कीन्हें। चली तुरत दर्वीकर लीन्हें।।
कोउ शिर तेल फुलेल लगाईं। अकीन राम सहसा उठि धाईं।।
गली बजार कुंआ पनिहारी। ठगी रही रघुपतिहिं निहारी।।

दोहा - कोउ अवलोकत अटन पुर, छूटकि छंटासी वाम।
कोउ आलि चली वजार को, कहां राम कहं राम।।

प्रभु छवि देखि बनिक भये बाउर। तौलें कनिक चढावें चाउर।।
सुमति सराफ विलोकत कैसे। भूले रजत सुलाखन जैसे।।

बेचत वसन वजाज विचारी। भूले पट निज पाट उतारे ।।
प्रभु निज रूप ठगौरी डारी। मंद हास पुनि पांस पंवारी।।१

उपर्युक्त लम्बे प्रसंग पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो हमारे सम्मुख जनकपुर वासियों के प्रेम विह्वल चित्र, गली बाजार, महल आदि के दृश्य साकार हो उठते हैं। सम्पूर्ण दृश्य का एक बिम्ब हमारे सम्मुख उभर आता है।वस्तुत: कवि के वस्तु व्यापार वर्णन की यह सफलता ही कही जायेगी। यदि वह चाहता तो परम्परानुसार इन वस्तुओं का नाम परिगणना मात्र कर अपने कवि कर्म के दायित्व का त्रिवाहि कर सकता था किन्तु कवि का उद्देश्य वस्तु वर्णन के माध्यम से रसानुभूति कराने का था तथा मानव हृदय की कोमल- सुकुमार वृत्तियों को परितुष्ट करने का था ।

तृतीय प्रसंग छोटा होते हुये भी आकर्षक तथा चित्रोपम है। पिता की आज्ञा से वनवास के लिये प्रस्थित श्रीराम, लक्ष्मण तथा सीता सहित अयोध्या से बाहर निकले । अयोध्यावासी शोक संतप्त हृदय से, प्रेम में विह्वल उनके साथ साथ तमसा नदी तक पीछे पीछे गये। कवि ने प्रकृति केमाध्यम से उस शोकपूर्ण वातावरण को अत्यन्त सजीव तथा मार्मिक बना दिया है। इसप्रसंग में उसका वस्तु व्यापार वर्णन भावोत्कर्ष में सहायक हुआ है। इस दृश्य से संबंधित वर्णन इस प्रकार है -

यतन अनेक किये रघुवीरा। फिरै न पुरजन प्रेम अधीरा ।।
गवने राम पिया दोहि पाये। विप्र दिाप सुरथ बैठाये ।
प्रजा समाज सहित रघुवीरा । पहुंचे तुरत ताम सरि तीरा।।
राम लषण सिय रूप विलोका। सरि सशोक मानहुं मगरोका।।
बीची विपुल पसारत पानी। धेरत मग फेरत रज धानी ।।
कूजत कारंडव कल हंसा। फिरहु राम जनु करत प्रशंसा।।
गुंजत मधुकर कमल कलापा। मन्द मन्द जनु करत विलापा।।
कहुं कहुं विटप लता झुकि आईं । करत विनय जनुपद शिरनाईं।।२

१- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा २४७ तथा २५० के मध्य की चौपाइयां ।
२- रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड दोहा १०४ तथा १०५ केमध्य का प्रसंग ।

उपर्युक्त प्रसंग पर जब हम दृष्टि पात करते हैं तो हमें यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि कवि ने प्रकृति चित्रण के साथ साथ शोक स्थायी भाव को उत्कर्ष प्रदान किया है जिसमें उसका वस्तु वर्णन सहायक सिद्ध हुआ है। साथ ही ऐसे वर्णन में उसने दृश्यों की स्थानगत विशेषता का विशेष ध्यान रखा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रघुवंश दीपक में संश्लिष्ट वस्तु वर्णन का उद्देश्य भाव व्यंजना द्वारा रस सृष्टि करना था। विभिन्न प्रसंगों में वस्तु वर्णन की विविधता एवं स्वाभाविकता ने वातावरण के प्रभाव से दृश्यों में मर्म स्पर्शिता और रसात्मकता की सृष्टि की है। ऐसे प्रसंग रघुवंश दीपक में पर्याप्त मात्रा में देखे जा सकते हैं। लंका दहन, हनुमान सीता की अशोक वाटिका में भेंट, राम रावण युद्ध वर्णन, राम राज्याभिषेक तथा राम राज्य वर्णन ऐसे ही प्रसंग है जिनमें कवि ने संश्लिष्ट वस्तु वर्णन द्वारा बिम्ब ग्रहण कराने का प्रयास किया है जिसमें वह सफल रहा है।

वस्तु व्यापार वर्णन में कवि ने अपनी सांस्कृतिक अभिरुचि का परिचय भी संश्लिष्ट वर्णन के अन्तर्गत प्रस्तुत किया है। 'रघुवंश दीपक' एतद्विषयक एक ही उदाहरण कवि की उपर्युक्त रुचि के परिचय के लिये पर्याप्त न होगा। चित्रकूट पर निवास करने का निर्णय कर श्रीराम अनुज लक्ष्मण तथा पत्नी सीता सहित वहां पहुंचते हैं। अपने ही हाथों से उन्होंने अपनी पर्णकुटी का निर्माण करना प्रारम्भ कर दिया जिसे देखकर देवता-वनवासी कोल,किरातों का वेश धारण कर उनकी सहायता को पहुंच गये। श्रीराम के मुख से पर्णकुटी की रचना की विस्तृत योजना कवि ने इस प्रकार प्रस्तुत की है -

' सुर सरि सम्मुख कह रघुवीरा। राखहु द्वार विलोकि पनीरा ।
लछिमन कुटी रचहु अति रूरी । नहि अति निकट न पुनि अति दूरी।।
जहं हमारि सीता के बाता । परै न कान धर्म्म भ्राता ।।
रचहु गवाक्ष ललित लघु कैसे । चहुं दिशि विपिन विलोकिय जैसे ।
अजिर मांझ वेदिका बनावहु। अति पुनीत तुलसी तरु लावहु ।।

दोहा- उत्तर दिशि लावहु सुतरु, परसहि छांह न छानि ।
हाटक विटप न लाइये, अजिर मांझ हित हानि।। १

१- रघुवंश दीपक - अयोध्या काण्ड दोहा १६४ तथा उससे पूर्व की चौपाइयां ।

उपर्युक्त चौपाइयों में कवि की सांस्कृतिक अभिरुचि के साथ साथ भवन निर्माण संबंधी विविध जानकारी भी स्पष्ट देखी जा सकती है। गवाक्षों की रचना में उसका संकेत स्पष्ट है जीवन को सुख तथा आराम पहुंचाने के लिये ही पर्णकुटी की उपयोगिता है ।

वस्तुवर्णन में कवि ने परम्परानुसार नाम परिगणन मात्र भी किया है। विभिन्न अवसरों पर वस्तुओं की एक लम्बी सूची प्रस्तुत कर उसके एतद्विषयक अपनी जानकारी का पूर्ण परिचय दिया है। ऐसे प्रसंगों के कतिपय उदाहरण अप्रासंगिक न होगें। जनक-वाटिका के वर्णन में कवि ने वृक्ष, पुष्प, पक्षी तथा लताओं के नामों का उल्लेख इसप्रकार किया है कि उसे यह भी ध्यान नहीं रहा कि विशेष प्रकार की जलवायु में उत्पन्न होने वाले वृक्ष, फल, फूल एक साथ ही जनक-वाटिका में किस प्रकार उपलब्ध हो गये उदाहरणार्थ निम्नांकित पंक्तियां देखी जा सकती हैं -

दोहा - कदलि,करील,कलाप,तुनि,कटहर तूत रसाल ।
सफलित दाड़िम अतिलसै, प्रफुलित तिलक तमाल।।
कंचर कुकुन्द कदम्ब अशोका। मदन महीपति के जनु ओका।।
चम्पक चारु तिलक पुन्नागा। विपुल वरणतरु सोह विभागा।।
ललित लवंग जायफल एला। अक्षा पलक्ष पुंगि फल केला।।
चन्दन विटप चिंचिनी चारु । ताल तमाल शाल सुर दारु ।।
श्रीफल सुभग खिसिया नाना। वैला विटप मनोज विताना।।
कुसुमित कर निकार कचनारु । भूमि सरोज सुगंध उदारु ।।
भूमि-सरोज-सुगंध कूजत मंधु मधुर धुनि केका।मनहुं वन्दिजन रटत अनेका।।
गूजंत मधुप मुखर अभिरामा। बाजत मनहुं मनोज दमामा ।।
दोहा- नव तुलसी दल वेदिका , चापी कर चहुं पास ।
सहजराम सुखमा निरखि, हरसे रमा निवास।। १ ।।

१- रघुवंश दीपक - बालकाण्ड दोहा - २३३ से २३४ ।

इसी प्रकार जनकपुर की वाटिका में सरोवर का वर्णन करते हुये कवि ने जल पक्षियों के नामों का परिगणन इस प्रकार किया है -

बाग मध्य सरसोह उजागर। मथन समीत छपेउ जनुसागर ।।
लसत तटी तरु गण प्रति छाया। अम्बुधिजनु मैनाक छपाया।।
कूजत करिउधुर्वचक वाका। जल कुकुट कल हंस बलाका ।।
सारस धुनि मुनि मन हरि लेहीं । मनसिज सुभट हाँक जनुदेहीं।।

चित्रकूट वर्णन में भी विभिन्न वृक्षों, लताओं तथा पशु पक्षियों के नामों की एक लम्बी सूची देते हुए इस बात का ध्यान नहीं रखा कि वहां लवंग उत्पन्न भी हो सकती है या नहीं । सम्पूर्ण वर्णन इस प्रकार है-

छन्द - तमाल ताल सिंसिपा विलोकि कोक मोहई ।
कंदव कुन्द इंगुदी रसाल शाल सोहई ।।
पलास पुंज पाकरी, कथ कर निकार से।।
कचंच चारु चिंचिनी, विचित्र देवदारु से ।
बदाम दाम वल्लरी, अशोक शोक नाश ही ।।
गली गली गुलाब की कली कली विकास ही।।
चेर पुंच चचरीक, वेलि की वितान व में ।
भले समीर ले मिले लवंग की लतान में ।। १
शिखी समोद कोकिला सुघोष दोष भंजहीं ।
पराग पुंज पानके मलिन्द मत्त गुंजही ।।
सुंगध सार केतकी पुनीत पद्म इस है ।
पयस्विनी कुमीठ मीठ पुष्प में पियूष है।।
सरोज मालिका सो जालिकाति सोहई ।
मंतगिनी मतंग वारि वृंद वोहई ।।

दोहा- विमल सलिल सरसिज लसै, निर्भर भरत पहार।
सोहत संत हृदय यथा, विगत अनेक विकार ।।

राम सीता विवाह के लिये अयोध्या से बारात लेकर चलने वाले राजा दशरथ की बारात का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करते हुये कवि ने विभिन्न जाति के घोड़ो के नाम इस प्रकार गिनाये हैं -

चढ़े कैकयी सुन सोमित्र घोरे। दले सो लगाये चले शीश मोरे ।

१- रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड दोहा २४६ से पूर्व का छन्द

सबै जाति के वाजि राजी विराजे। चढ़े वीर बांके जरे जीन साजे ।।
कोउ कांसकारी वलोची बुखारी। दुरंगा सुरंगा अबलखा मुहारी ।।
समुंदाधि पीलंग कल्यूत कच्छी ।मुशक्की मुंजनस चलै चाल अच्छी ।।
जरदा हरे रंग सजांब सोहै ।सुरक्खा बदामी फुलौरा विमोहै ।।
ईराकी घने साहनी साज्य त्याये ।हिरौजी विरोजी सनैजी सुहाये।।
अबलसी बदक्सी तुरक्की व ताजी। लसै अंबरी सो महावेग वाजी।।
फिरंगी महालोल कुम्मैत लीले । कहों लौ कहौवाजि राजी रंगीले।।१

अशोक वाटिका का वर्णन भी कवि ने इस पद्धति से किया है। वृक्षों, फूल, लता तथा पक्षियों आदि के नामो की परिगणना करते समय कवि ने यहां भी यह ध्यान नहीं रखा कि विशेष प्रकार की जलवायु में उत्पन्न होने वाले वृक्ष,फूल तथा पक्षी एक साथ ही अशोक वाटिका में कैसे मिल सकते हैं । २ इसी प्रकार विविध प्रकार के व्यंजनों के नाम तथा नखशिख श्रृंगारादि वर्णन में विभिन्न आभूषणों की एक लम्बी सूची भी देखने को मिलती है।

प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत वस्तु वर्णन में कवि को इस बात का विशेष ध्यान रखना पड़ता है कि उसके अति विस्तार के कारण कहीं कथा की गति में अवरोध तो नहीं उत्पन्न हो रहा और पाठक को रसात्मक अनुभव कराने में वह बाधक तो नहीं सिद्ध होती। 'रघुवंश दीपक' में यद्यपि कवि ने बड़ी सावधानी से वस्तु व्यापार वर्णन के कवि कर्म का निर्वाह किया है किन्तु कहीं कहीं उसकी अतिशयता ने कथा की स्वाभाविक गतिशीलता में बाधा अवश्य पहुंचाई है। कवि ने जहां अपनी बहुज्ञता प्रदर्शन का प्रयास किया है, वहां ~~उसके~~ कथा की गति शीलता एवं सहज प्रवाह में अवरोध उत्पन्न हो गया है।यद्यपि ऐसे स्थल बहुत नहीं है। समग्रत: सहजराम जी का वस्तु व्यापार वर्णन मानव जीवन के विविध पक्षों के उद्घाटन में सहायक ही सिद्ध

१- वही- बालकाण्ड दोहा २८१ तथा २८२ के मध्य की चौपाइयां ।
२- रघुवंश दीपक -सुन्दरकाण्ड में दोहा ३२ के पूर्व का छन्द इसप्रकार है -
देखे विटप बहुरंग । कहुं करत नाद विहंग ।
कहुं लसत वेलि वितान। तहं करत कोकिल गान।।
चंपक तिलक पुन्नाग । अति पिवत पुंज पराग ।।
कहुं शिंशिपा सुर दारु। विलसत चमेली चारु ।।
कहुं दाड़िमन के धाम । फूले फले अभिराम ।।

क्रमश:....

४- भाव व्यंजना :

भाव व्यंजना प्रबन्ध काव्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। मानव प्रकृति की सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति तथा विभिन्न भावों की रसात्मक अनुभूति की सम्प्रेषणीयता भाव व्यंजना की दृष्टि से अत्यन्त महत्व पूर्ण होती है। प्रबन्ध काव्य में भाव व्यंजना के महत्व पर विचार करते समय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने दो बातों की ओर संकेत किया है। आचार्य शुक्ल जी के ही शब्दों में ' भाव व्यंजना' का विचार करते समय दो बातें देखनी चाहिए (१) कितने भावों और गूढ़ मानसिक विकारों तक कवि की दृष्टि पहुंची है। (२) कोई भाव कितने उत्कर्ष तक पहुंचा है। १ ~~कोई भाव कितने उ~~ ' रघुवंश दीपक ' में जब हम उपर्युक्त दोनों बातों को लक्ष्य करने का प्रयास करते हैं तो हमको यह दिखाई देता है कि सहजराम जी ने मानव हृदय के विभिन्न भावों और गूढ़ मानसिक विकारों तक अपनी व्यापक दृष्टि डाली है। कवि ने सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि से भिन्न भिन्न परिस्थितियों के बीच संघटित होने वाली अनेक मानसिक अवस्थाओं का विश्लेषण किया है तथा विभिन्न भावों और गूढ़ मानसिक विकारों तक उनकी दृष्टि अवश्य पहुंची है। साथ ही उन्होंने ऐसे भावों की व्यंजना में गोस्वामी तुलसीदास जी की ही भांति रसमयता की सृष्टि कर सफलता प्राप्त की है।

भाव व्यंजना के अन्तर्गत कोई भाव कितने उत्कर्ष तक पहुंचा है, इस आधार पर जब हम 'रघुवंश दीपक ' की भाव व्यंजना पर दृष्टिकोण करते हैं तो हम देखते हैं कि उसमें रति, वात्सल्य ,शोक, क्रोध, उत्साह ,हास्य, घृणा तथा निर्वेद सभी स्थायी भावों की व्यंजना हुई है। श्रृंगार के संयोग तथा वियोग

एला लवंग सुवास । रहि पूरि पुर चहुंपास ।।
जम्बू रसाल पलक्ष । कहुं चिंचिनी के वृक्ष ।।
कहुं लसत चन्दन चारु। तहं करत व्याल विहार।।
कहुं रहेउ फूलि गुलाब। जनु मदन की महताब।।
कहुं शाल वृक्ष विशाल। कहुं तुंग ताल तमाल ।।
कहुं नारिकेल कठोर। कहुंच कुंद सुमन सुम्मेर ।।
कहुं इंगुदी अभिराम। कहुं श्रीफल के दाम ।।
कहुं वापिका वनजात। फूले विलोकि प्रभात ।।
कहुं नारंगी अरु ता। कहुं पनस पावन तूत ।।

२- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - जायसी ग्रन्थावली पंचम संस्करण पृष्ठ ६४

दोनो ही पक्षों में कवि ने विभिन्न मनोदशाओं तथा मानसिक स्थितियों एवं मानव हृदय की कोमलता की सहज अभिव्यक्ति का प्रयास किया है। सीता और राम के पूर्व राग तथा विवाहोपरान्त उनके संयोग श्रृंगार को कवि ने बड़े उत्साह के साथ प्रस्तुत किया है। ऐसे वर्णनों में कवि ने गोस्वामी तुलसीदास जी की भांति ही मर्यादा का विशेष ध्यान रखा है। सीता और राम का वियोग वर्णन केवल प्रलाप मात्र नहीं था अपितु उनके अन्तर में निवास करने वाले एकान्त दाम्पत्य प्रेम की सहज अभिव्यक्ति थी। १ इसी प्रकार पूर्व राग में कवि ने राम के रूप सौन्दर्य की चर्चा सीता की एक सखी के माध्यम से उनके सम्मुख प्रस्तुत कर उत्कण्ठा तथा मिलन की व्यग्रता की व्यंजना द्वारा रति भाव का उत्कर्ष दिखाया है जो अपनी मौलिकता लिये हुये है। २

इसी प्रकार दशरथ कौशल्या एवं रावण मन्दोदरी के माध्यम से कवि ने वात्सल्य भाव ब में अत्यधिक उत्कर्ष दिखाया है। युद्ध वर्णनों में उत्साह को स्पष्ट ही लक्षित किया जा सकता है क्योंकि 'रघुवंश दीपक' में युद्धों का विस्तृत वर्णन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। वीरों के युद्ध कौशल का विस्तृत वर्णन करते हुये कवि ने युद्ध में घायल होने वाले वीरों के रक्त रंजित शरीर तथा युद्ध की भीषण विभीषिका को व्यंजित करने के लिये गीध, श्रृंगाल, योगिनी, प्रेत, पिशाचादि द्वारा युद्ध भूमि में मांस भक्षण तथा मृत एवं घायल वीरों की अन्तड़ियों को खींच खींच कर भागने व चांचार मचाने के वीभत्स दृश्य प्रस्तुत किये हैं। इसी प्रकार अन्याय तथा अपमान का प्रतिकार एवं प्रतिशोध की भावना से उत्पन्न क्रोध का भाव भी रघुवंश दीपक में लक्ष्मण के चरित्र तथा परशुराम-लक्ष्मण सम्वाद में अत्यन्त उत्कर्ष की स्थिति को प्राप्त हो सका है। राम के वन गमन पर लक्ष्मण द्वारा प्रकट किया गया क्रोध, चित्रकूट में भरत के आगमन पर उन्हीं के द्वारा व्यक्त किया गया क्रोध, सुग्रीव को मित्रता के पथ से हटते हुये देखकर राम तथा लक्ष्मण का

१-दृष्टव्य- रघुवंश दीपक- सुन्दरकाण्ड दोहा ७१ तथा ७२ के मध्य वर्णित राम का वियोग वर्णन,तथा दोहा २३ एवं २५ के मध्य सीता का वियोग वर्णन।

२- दृष्टव्य- अ-रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा २३१ तथा २३२ के मध्य का पूर्वराग वर्णन।

ब- वही-दोहा २४१ तथा २४३ के मध्य का पूर्वराग वर्णन।

क्रोध मानव हृदय की सहज प्रतिक्रिया को व्यक्त करते हैं ।

भाव व्यंजना कोहम उन मार्मिक प्रसंगों कीयोजना में भी देख सकते हैं जहाँ कवि ने सुख दुख शोक, उत्साहादि भावो को अत्यन्त मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।वस्तुत: ऐसे प्रसंगो की विस्तृत चर्चा अगले पृष्ठो में यथास्थान की जायेगी। यहाँ एतद्विषयक कतिपय प्रसंगो का उल्लेखमात्र ही समीचीन होगा। ऐसे प्रसंग निम्नांकित है -

विश्वमित्र द्वारा राम लक्ष्मण कीयाचना पर दशरथ का वात्सल्य जनकपुर में राम लक्ष्मण का प्रवेश तथा पुरवासियोका उनके सौन्दर्य पर मुग्ध होना, जनक वाटिका के राम-सीता मिलन तथा दोनो के हृदय में एक दूसरे के प्रति अनुराग का अंकुरित होना, राम वनगमन पर अयोध्या वासियों का शोक, वन पथ जाते हुये राम लक्ष्मण तथा सीता की सुकुमारता पर ग्राम वासियों द्वारा प्रकट किये गये उद्गार, भरत का चित्रकूट गमन तथा मार्ग में उनके द्वारा व्यक्त किये गये उद्गार तथा आन्तरिक व्यथा की अभिव्यक्ति, चित्रकूट में राम-भरत मिलन, सीताहरण पर राम का विलाप ,वालि वध पर तारा का विलाप, प्रवर्षण गिरि पर निवास करते हुये राम का विरह उतप्त होना , अशोक वाटिका में सीता की विरहावस्था का वर्णन,युद्ध में शक्ति से आहत होने वाले लक्ष्मण के प्रति प्रकट किये गये राम के उद्गार तथा उनका विलाप, मेघनाद की मृत्यु पर रावण का पुत्र शोक में संतप्त होना, सीता की अग्नि परीक्षा का प्रसंग, राम का अयोध्या लौटने की प्रतीक्षा में भरत की मानसिक वेदना का चित्रण, वनवास से सकुशल लौटे हुये पुत्रो तथा पुत्र वधू सीता को देखकर माताओ, पुरवासियो के आन्तरिक अनुराग का वर्णन, सीता परित्याग के अवसर पर लक्ष्मण की मनोदशा, पति त्यक्ता सीता की मानसिक स्थिति का चित्रण आदि। इन सभी प्रसंगो में मानव हृदय की विभिन्न भाव भूमियो एवं मनोदशाओ कीमार्मिक व्यंजना हुई है ।

उपर्युक्त प्रसंगो के अतिरिक्त कवि ने कतिपय सर्वथा नव नवीन प्रसंगो की उद्भावना कर अपनी भावुकता तथा कलात्मक रुचि का परिचय दिया है जो दृष्टव्य है। इन प्रसंगो में बाल वर्णन के अन्तर्गत कवि ने कतिपयउन खेलों

भी वर्णन किया है जो प्राय: सभी सामान्य बालक खेला करते हैं। किन्तु खेल केवर्णन के माध्यम से ही कवि ने नहीं प्रसंगोद्भावना के द्वारा राम के सौन्दर्य की जो भाव व्यंजना प्रस्तुत की है वह इसप्रकारहै। आंख मिचौनी के खेल में राम अपने रूप सौन्दर्य, शरीर की कान्ति तथा प्रकाश से उस स्थान को भी प्रकाशित कर देते हैं जहां अंधेरे में अन्य बालक छिपते हैं। सारे बालक जो राम केसाथ खेलते हैं, इस कारण उनसे रूठ जाते हैं कि राम को अन्य बालको को ढूंढ़ने में किंचित भी श्रम नहीं करना पड़ता। बाल सखा राम को अपने साथ न खिलाने के लिये उन्हें अपनी मण्डली से अलग कर देते हैं। राम अपने बाल सखाओ हाथ जोड़कर ताल बजाकर गाते तथा नाचते हुये प्रसन्न कर लेते हैं। माँ कौशल्या सुमित्रा तथा कैकेयी राम की इसबाललीला को देखकर आनन्दित हो उठती है। कवि के ही शब्दो में सम्पूर्ण वर्णन इसप्रकार है -

भवन भूरितम बाल लुकाही। तन प्रकाश पकरहिं गहि बाँही ।।
बाल सखा सुनि चले रिसाई। खेलव हम न राम संग भाई ।।
जोरि पाणिपुनि तिनहिं मनावहिं। तालबजाइ मधुर स्वर गावहिं ।।१

वस्तु उपर्युक्त वर्णन कवि की मौलिक काव्य चेतना का द्योतक है जो उसे गोस्वामी तुलसीदास जैसे सशक्त महाकवि से भिन्न स्थान प्रदान करती है। साथ ही उसकी सूक्ष्म वस्तु निरीक्षण की दृष्टि का परिचय देती है।

मार्मिक स्थलों की पहिचान

प्रबन्ध काव्य में कथा की सम्बद्ध श्रृंखला और उसके स्वाभाविक क्रम के ठीक ठीक निर्वाह के साथ साथ हृदय को स्पर्श करने वाले उसे नाना भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाले प्रसंगो का समावेश होना चाहिए।' इतिवृत्त मात्र के निर्वाह से रसानुभव नहीं कराया जा सकता। कथा प्रवाह के बीच में गंभीर और मर्मस्पर्शी स्थलों की सम्यक योजना रसात्मकता के लिये एक अनिवार्य

१- रघुवंश दीपक - बालकाण्ड - दोहा १४१ तथा १४२ केबीच की चौपाइयां।

आवश्यकता है।प्रस्तुत आलोच्य कृति पर जब हम इस दृष्टि से विचार करते हैं तो हमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि उसमें गम्भीर औरमर्मस्पर्शी स्थलों की न्यूनता नहीं है और कवि ने प्रबन्ध काव्य की अनिवार्य आवश्यकता के अनुरूप ही मानव जीवन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिये सुख,दुख,हर्ष-विषाद, आशा निराशा, घृणा,क्रोध, संयोग - वियोग, जय-पराजय, छल-कपट,मित्रता शत्रुता, श्रृंगार वात्सल्यादि के गम्भीर औरमर्मस्पर्शी स्थलों की योजना की है। सम्पूर्ण प्रबन्ध में ऐसे स्थलों की क्रमबद्ध योजना दिखाई देती है। सम्प्रति `रघुवंश दीपक के ऐसे कतिपय स्थलों का परिचय प्राप्त करना अप्रासंगिक न होगा । रघुवंश दीपक में पाये जाने वाले मार्मिक प्रसंग इसप्रकार हैं-

श्रवण वध कथा तथा दशरथ को अंध ऋषि का शाप, विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण की याचना तथा दशरथ का मोह, सीता का पूर्वराग तथा राम के मिलन की उत्कण्ठा, राम के निर्वासन का प्रसंग तथा अयोध्या-वासियों का शोक संतप्त होना, भरत की मानसिक वेदना तथा उनका चित्रकूट प्रस्थान, वन पथ पर ग्रामवासियों द्वारा श्रीराम, लक्ष्मण तथा सीता की सुकुमारता पर शोक संतप्त होना, चित्रकूट में राम-भरत मिलन तथा भरत का अयोध्या लौटने का प्रसंग, सीता हरण पर राम का विलाप,बालिवध पर बालि-राम सम्वाद, सुग्रीव पर क्रोध, हनुमान का अशोक वाटिका में सीता से भेंट तथा वार्ता, हनुमान का सीता की खोज लेकर लौटने पर श्रीराम का सीता की स्मृति में विलाप, लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम का विलाप, मेघनाद की मृत्यु पर रावण का पुत्र शोक से संतप्त होना, रावण पर विजय प्राप्त कर राम का अयोध्या आगमन तथा नगरवासियों,भरत एवं माताओं की हार्दिक स्थिति का वर्णन, सीता परित्याग पर लक्ष्मण का शोक संतप्त होना एवं सीता का विलाप आदि ऐसे प्रसंग हैं जिन्हें कथा के गम्भीर तथा मर्मस्पर्शी स्थलों से सम्बद्ध किया जा सकता है और जिनके चित्रण में कवि ने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में `रघुवंश दीपक ` की कथावस्तु का परीक्षण करते समय हम इस बात का उल्लेख करचुके हैं कि किस प्रकार श्रवण

वध की प्रासंगिक कथा के द्वारा कवि ने एक मार्मिक प्रसंग की योजना की है जिसमें शाप की परिणति वरदान के रूप में अनायास ही होजाती है। शिकार खेलते हुये निस्संतान राजा दशरथ के शब्द भेदी बाण से अनजान में ही तमसा नदी के तट पर रात्रि में श्रवण का वध अनजान में ही हो जाता है। पुत्र शोक से व्यथित श्रवण के पिता ने दशरथ को यह शाप दिया कि -

साधु सुधान सुशील कुमारा ।मातु पिता सेवक तुम मारा।।
तासु वियोग तजौ तन जैसे । नरपति तजहु प्राण तुम तैसे ।।१

निस्संतान दशरथ को यह शाप वरदान की भाँति सुखकर प्रतीत हुआ। वे इस आनन्दानुभूति से पुलकित हो उठे कि उन्हें कम सेकम सन्तान के मुख देखने का सुअवसर तो प्राप्त होगा। २ कवि ने सामान्य मानव की पुत्रैष्णा को अत्यन्त मार्मिकता से व्यंजित किया है।

एक दूसरे मार्मिक प्रसंग में कवि ने वात्सल्य भावना को इतनी स्वाभाविकता तथा सजीवता प्रदान की है कि ऐसी तीव्रानुभूति गोस्वामी तुलसीदास जी में भी नहीं मिलती। विश्वामित्र ने यज्ञ रक्षार्थ दशरथ से उनके प्रिय पुत्र राम एवम् लक्ष्मण की याचना की। दशरथ जिन्हें चौथपन में चतुर पुत्रों की प्राप्ति यज्ञादि अनुष्ठान के द्वारा वरदान स्वरूप में हुई थी, विश्वामित्र जी की इस याचना से व्यथित हो उठे। कवि ने पिता के हृदय की दारुण व्यथा कोइस प्रकार व्यक्त किया है -

सुनि मुनि मर्म वचन अवधेशा। करकि उठेउ उर कठिन कलेशा ।।
मारेउ मनहुं अचानक तीरा। मूर्छि महीपर परेउ अधीरा ।।
नैन सनीर पीर उर मारी। धरि धीरज पुनि उठे सम्हारी।।
साधु स्वभाव कहत श्रुति टेरी। अपराधिहु पर प्रीत घनेरी।।
कहं मारीच निशाचर घोरा। कहं लघुबालक वयस किशोरा।।
ताते मुनि मैं सैन समेता । चलहुं साथ सुत रहहिं निकेता।।३

१- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा ११२ तथा ११३ केमध्य की चौपाइयां

२- वही, ' नाथ कीन मैं बड़ अपराध । तुम अति दीन दयानिधि साध ।।
मुनिवर सुखद श्राप मोहि दीन्हा। हमरे जान अनुग्रह कीन्हा।।

३- वही, दोहा १७६ तथा १७७ केमध्य की चौपाइयां ।

एक अन्य प्रसंग में कवि की यह मर्म स्पर्शिनी दृष्टि और भी सफल रूप में देखी जा सकती है। जनकपुर वासियों से राम के अनुपम सौन्दर्य की चर्चा सुनकर सीता के हृदय में पूर्व राग अंकुरित हो उठा। पुष्प वाटिका में उसी रूप माधुरी का पान कर वह राम के प्रेम में विह्वल हो उठी। किन्तु लोककानि तथा पिता का प्रण मिलन में बाधक सिद्ध हो रहा था। मन को यह विश्वास नहीं हो पा रहा था कि राम के सुकुमार हाथ कठोर शिव धनुष को उठा सके ऐसी स्थिति में केवल दैव का ही एक मात्र अवलम्ब शेष था। कवि ने नारी हृदय की इस अधीरता तथा विवशता का जो मार्मिक तथा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है वह उसकी सूक्ष्म दृष्टि तथा व्यापक काव्य चेतना का परिचायक है। सम्पूर्ण प्रसंग कवि के शब्दों में इस प्रकार है -

प्रभु छबि निरखि मुदित मन सीता। सुमिरि पिता प्रण भई सभीता।।
पितु प्रण कठिन कठिन भव चापू। कठिन मोर प्रण कठिन मिलापू।।
चारि कठिन पंचम विधि वामा। तेहि हठि रचेउ कठिन सब कामा।।
हे शिव हे विरंचि गण नायक। हे श्रीपति अब होहु सहायक ।।
टूटे धनुष मिटै दुख नाना। बिनु टूटे तन रहै न प्राना ।। १

रघुवंश दीपक का एक अन्य मार्मिक प्रसंग इस प्रकार है-राम पिता की आज्ञा मानकर मुनिवेश में अयोध्या से अपने बन्धु लक्ष्मण तथा पत्नी सीता के साथ वनवास के लिये विदा देते हैं। पिता, माता, गुरु तथा अयोध्या नगर के वासी आबाल वृद्ध नर नारी सभी उनके वियोग से विकल हो उठे हैं। कवि ने इस अवसर को इतना मार्मिक तथा विषाद पूर्ण बना दिया है कि वृक्षादि जड़ वस्तुएँ भी वेदना से पूर्ण हो गई हैं। सम्पूर्ण प्रसंग का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है। २

दोहा - एक ओर भावी प्रबल, एक ओर सब लोग ।।
भरत मातु सुख बैठि रो, बरबस कीन्ह वियोग।।
करत विलाप राउ अरु रानी। दासी दास हृदय हति पानी ।।
उर्ध्व स्वास महा मुनि लेही। धरि धीरज पुनि धीरज देही ।।

१- रघुवंश दीपक - बालकाण्ड दोहा २६२ तथा २६३ के मध्य की चौपाइयां।
२- रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड दोहा १०१ तथा १०३ के मध्य की चौपाइयां।

जेहि निकेत गायक गुण गावत। बीना मधुर मृदंग बजावत।।
तेहि निकेत कुररी इव रानी। करत विलाप दुसह दुख सानी।।
राम विरह पावक पुर लागी । तजि तजि भवन चले सब भागी।।
ब्राह्मण वृद्ध चले गति लाठी। गिरि गिरि परत उठत गहि गाठी।।
विटप विपुल बिनु पद पछिताहीं। किमि रघुनाथ साथ बन जाहीं।।
दोहा - कहहिं पुकारि पुकारि सब, नागर नारि नर वृंद ।
अब की बार देखाय मुख, विदा होहु रघुनन्द ।।

अप्रत्याशित दारुण परिस्थिति की विषमता से आहत भरत के निश्छल हृदय तथा उदात्त भ्रात प्रेम की गम्भीर एवम् मार्मिक व्यजंना में रघुवंश दीपक, के कवि की भावुकता तथा तीव्र कल्पना शक्ति को देखा जा सकता है। लोक भीरुता, आत्म ग्लानि, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व तथा तज्जनित विभिन्न आशंकाओं से संकुल भरत के हृदय की स्वाभाविक अभिव्यक्ति सामान्य मानवीय सम्वेदना तथा संचेतना का प्रतीक बन गई है। सहजराम जी द्वारा चित्रित यह गम्भीर तथा मार्मिक कथा प्रसंग चित्रकूट में राम-भरत मिलन के साथ पूर्ण होता है । १

कुश-कण्टकों से पूर्ण बन मार्ग पर नंगे पैर चलने वाले सुकुमार पथिक राम, लक्ष्मण, सीता के प्रति मार्ग में पड़ने वाले ग्रामवासियों की हार्दिक-भावना तथा उनके द्वारा व्यक्त की गई प्रतिक्रियाओं में भी कवि की मर्मस्पर्शिनी दृष्टि तथा उसकी भावुकता का परिचय मिलता है । ग्राम वधुएँ परस्पर वार्ता करती हुई कहती हैं -

नखशिख निरखि हरषि पुरवासी। सम महि दिये,नवल दल डासी।।
कहें परस्पर सखी सयानी। सखि विधिगत कछु जात न जानी।।
विधि विपरीत कर्म सब करई । हर्ष विषाद न कछु उर धरई ।।
विष अति सुलभ सुधा अति दूरी। सुर तरु नाक आंक महि भूरी।।
काक अमर कोकिल मरै आशू । मृग दृग विमल दीन्ह बनबासू ।।२

१- दृष्टव्य- रघुवंश दीपक- अयोध्याकाण्ड में वर्णित उपर्युक्त कथा प्रसंग ।
२- रघुवंश दीपक- अयोध्या काण्ड- दोहा १४४ तथा १४५ के मध्य की चौपाइयां

प्रेमातुर नर नारि निहारी। नैन सैन करि सिय बैठारी ।।
बोली बचन कमल कर जोरी। सुनहु दैवि मिथिलेश किशोरी।।
हम स्वामिनी कुगाम कुनारी।अति समीत पूंछत सकुचारी।।
~~अति-सभीत-प~~ शोभा सींव सुभग दोउ भ्राता।केहि अपराध दीन्ह बनबाता[1]

बनवास काल में राम की आन्तरिक मनोव्यथा के मर्म स्पर्शी चित्र को कवि की निम्नांकित चौपाइयों में देखा जा सकता है -

तेहि निशि तहां कीन्ह विश्रामा। जागि परे प्रभु अरध त्रिजामा।।
सुधि करि अवध नगर नर नारी। प्रिय परिवार पिता महतारी।।
भरि आये जल राजि विलोचन। बोले वचन भक्त भव मोचन।।
~~बोले-बचन-भक्त-भव-मोचन।-देखहु-कठिन-काल-गति-भ्--~~
देखहु कठि काल गति भ्राता। दीन्ह दुसह दुख बाम विधाता।।
हम सम सुत कौशल्या जाये। शूर सुशील सपूत कहाये ।।
सो समर्थ जीवत जग अहईं । जननी जनक दुसह दुख सहहीं।।
रोइ रोइ निशि दिवस बिताइहिं। मातु हमारी अब हुइ जाइहि।।
तुम्हरे विरह विकल सुनु भ्राता । करिहि विलाप सुमित्रा माता।।[2]

रघुवंश दीपक के कवि में जीवन की प्रत्येक स्थिति के मर्म स्पर्शी अंशों को साक्षात्कार कर उन्हें पाठक के सम्मुख अपनी शब्द शक्ति द्वारा प्रत्यक्ष करने की पूर्ण क्षमता थी। रावण जैसे निमर्म एवम् क्रूर हृदय वाले दारुण असुर के हृदय में भी मेघनाद वध पर शोक उत्पन्न कर कवि ने वात्सल्य भाव की ती अनुभूति व्यक्त की है जो अत्यन्त मर्म स्पर्शी है। अपनी पुत्रवधू को विलाप करती देख रावण केआंखों से भी आंसुओं की धारा प्रवाहित हो चली और हृदय विषाद से भरगया।[3] इसी प्रकार लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम का विलाप तथा अशोक वाटिका में सीता की विरहावस्था के चित्र अत्यन्त मर्म स्पर्शी बन सके हैं। मानव प्रकृति के जितने अधिक रूपों के साथ सहजराम जी

१- रघुवंश दीपक - अयोध्या काण्ड- दोहा १४५ तथा १४६ के मध्य की चौपाइयां
२- वही - दोहा १४७ तथा १४८ के मध्य की चौपाइयां ।
३- रघुवंश दीपक- लंका काण्ड की निम्नांकित चौपाई -
पुत्र वधू कर रोदन नादू। सुनि दशमुख मने जनित विषादू ।।
पुत्र शोक उपजा उर दाहू। बहेउ विलोचन वारि प्रवाहू ।।

ने अपने हृदय के रागात्मक सामंजस्य को स्थापित किया है तथा उनके यथातथ्य चित्रण के लिये भाव प्रसार की शक्ति, मर्म स्पर्शी स्वरूपों की उद्भावना और शब्द शक्ति की क्षमता सिद्ध की है उतनी हिन्दी राम-काव्य धारा में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी को छोड़कर अन्य किसी कवि में नहीं मिलती ।

५- शैली

महाकाव्य की शैली को उसके अन्य तत्वों से भिन्न करके देखना संभव नहीं क्योंकि मूलत: उसका रूप विधान ही उसकी शैली होती है। यों शैली का अर्थ होती है अभिव्यक्ति का ढंग। अनुभूत सत्यको कवि जिस ढंग से अभिव्यक्ति करता है वह उसके निजी व्यक्तित्व, रुचि तथा काव्य चेतना से प्रभावित होता है। विषय प्रधान काव्य रूप होने के कारण महाकाव्य में कवि का व्यक्तित्व उसकी विराट चेतना तथा महान काव्य प्रतिभा का द्योतक बन जाता है। अत: सम्पूर्ण काव्य की अभिव्यक्ति पर कवि के व्यक्ति की छाप लगी रहती है। भारतीय आचार्यों ने गुण, ध्वनि, रीति, अलंकार शब्द शक्ति तथा औचित्य विचार को शैली का आवश्यक अंग माना है। किन्तु विकास की मात्रा में महाकाव्यों में यह सभी अंग उसके वाह्य उपकरण मात्र स्वीकार किये गये हैं । उसके आन्तरिक पक्ष के लिये कवि की विराट चेतना, तथा उसकी महा प्राणता को आवश्यक माना गया है। जीवन के विविध और समग्र रूप का चित्रण होने के कारण महाकाव्य में व्यापकता, प्रशस्तता तथा गहराई होती है। अत: डा० शम्भूनाथ सिंह का यह कथन उचित ही प्रतीत होता है कि " महाकाव्य की शैली ,शब्द चयन, अलंकारों के प्रयोग औरअन्य नियमों के पालन पर नहीं निर्भर करती अपितु वह तो कवि की उस महाप्राणता पर निर्भर करती है जिसकी छाया का प्रक्षेपण काव्य पर स्वत: हुआ करताहै। इस प्रकार कवि की महाप्राणता अथवा विराट चेतना महाकाव्य की शैली में ही

१- डा० शम्भूनाथ सिंह,हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास प्रथमावृत्ति पृष्ठ ११५

विशेष रूप से अभिव्यक्त होती है। ' १

रघुवंश दीपक में जिस महान चरित्र को कवि ने काव्य का विषय बनाया है वह उससे पूर्व अनेक महाकवियों के काव्य का विषय बन चुका था। अस्तु उसमें नवीन कान्ति तथा गरिमा का सन्नि-वेष करने के लिये कवि ने अपनी विराट काव्य चेतना तथा व्यापक जीवन दृष्टि का उपयोग किया है जिसमें उसकी वैयक्तिक साधना मूर्त हो सकी है। युगीन चेतना की पृष्ठभूमि पर राम का चरित्र लोक चेतना का प्रतिनिधित्व करता हुआ मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों की व्याख्या भी कर सके उसके लिये कवि का जीवन के प्रति निजी दृष्टिकोण विशेष महत्व रखता है। परम्परा से प्राप्त राम कथा में अपनी निजी रुचि तथा जीवन दृष्टि से नवीन प्रसंगों की उद्‌भावना करके जिस महदुदेश्य को लेकर 'रघुवंश दीपक ' की रचना की गई है उसकी सफल अभिव्यक्ति ही शैली के रूप में देखी जा सकती है। राम 'रघुवंश दीपक ' के नायक ही नहीं कवि सहजराम जी के परमाराध्य भी थे। अत: राम का चरित्र कवि का जीवनादर्श भी था। अपने जीवनादर्श को मानव मात्र का जीवनादर्श बनाने की महत्वाकांक्षा को कथा के रूप में प्रस्तुत किया है। वस्तुत: कवि की इस महाप्राणता ने अथवा उसकी विराट चेतना ने उसकी अभिव्यक्ति को उदात्तता तथा गम्भीर एवम् गरिमा पूर्ण बना दिया है। अस्तु हम यह कह सकते हैं कि उसकी शैली महाकाव्योचित ही उदात्त एवम् गरिमामयी है।

' रघुवंश दीपक ' की गरिमा मयी उदात्त शैली को हम उसके चरित्र चित्रण तथा भावव्यंजना के क्षेत्र में विशेष रूप से देख सकते हैं। रघुवंश दीपक में चित्रित राम, भरत+ लक्ष्मण, सीता, हनुमान के चरित्र इतने उदात्त तथा स्वाभाविक हैं कि वे काल के प्रवाह में कभी भी नष्ट नहीं हो सकते और सदैव भारतीयजन मानस को प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे। रघुवंश दीपक के कवि के भक्त रूप ने यदि एक और राम को ब्रह्म रूप में अपना परमाराध्य माना है तो उसके मानवतावादी दृष्टिकोण ने उन्हें आदर्शों के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित कर विश्व साहित्य के किसी भी नायक से श्रेष्ट सिद्ध करने का प्रयास किया है।

साथ ही उसके भावुक कवि और कलाकार हृदय ने उन्हें सामान्य मानव के रूप में भी चित्रित किया है जिसमें मनोवैज्ञानिकता, सौन्दर्य बोध की उत्कृष्टता ने स्वाभाविकता की सरल अभिव्यक्ति भी की है। जिस विराट कल्पना को स करने के लिये कवि ने ऐसे उत्कृष्ट चरित्र का चित्रांकन किया है वह अपने आप में स्वयं ही एक पूर्णता है। राम के अतिरिक्त भरत का चरित्र भी आदर्श के जिस उच्च विन्दु पर स्थापित किया गया है वह भी कवि की विराट प्रतिभा का परिचायक है। सम्भवत: लक्ष्मण, सीता और हनुमान जैसे चरित्र की कल्पना एक महान् कवि ही कर सकता है साथ ही उन्हें लोक मानस के सम्मुख जिस उदात्तता से प्रस्तुत किया गया है वह किसी भी अलंकृति की अपेक्षा नहीं रखता। `रघुवंश दीपक` की शैली की अन्तवर्ती गरिमा तथा उदात्तता को लक्ष्य कर लेने के पश्चात् उसके अन्य वाह्य उपकरणों को भी संक्षेप में देखना अनुचित न होगा। कथानक, सर्गवद्धता, महान नायकत्व, भाव व्यंजना, वस्तु व्यापार वर्णन, अलंकार, छन्द भाषा, शब्द शक्ति का भी उचित समाहार मिलता है। सज्जन प्रशंसा दुर्जन निन्दा, सूर्योदय संध्या वर्णन, वन, पर्वत तथा ऋतुओं के रूढ़ि वर्णन भी रघुवंश दीपक में मिलते हैं। अस्तु अलंकारियों की दृष्टि से भी देखा जाये तो `रघुवंश दीपक` एक महाकाव्य ठहरता है और उसकी शैली महाकाव्योचित ही है।

६- उद्देश्य

उद्देश्य की दृष्टि से जब हम `रघुवंश दीपक` के महा-काव्यत्व पर दृष्टि डालते हैं तो हमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि उसके एक महान् उद्देश्य से प्रेरित कथा वस्तु का सगंठन किया गया है। प्रस्तुत प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में हमने `रघुवंश दीपक` की रचना के उद्देश्य का विस्तारपूर्वक लक्ष्य किया है। यहाँ उसकी ओर संकेत मात्र करना ही पर्याप्त होगा। जिस प्रकार भक्तिकाल के प्राय: सभी भक्त कवियों के सम्मुख भगवन्नाम के कीर्तन भजन तथा उनके चरित्र अथवा लीला गान के साथ साथ लोक हित की उदात्त भावना कार्य करती थी जिससे प्रेरित होकर ही वे काव्य रचना करते थे केवल `वाणी विलास` अथवा

' प्राकृत ' जन गुण गान के लिये नहीं उसी प्रकार भक्त कवि ' सहज राम जी के सम्मुख भी मानवता की यह उच्च भूमि तथा काव्य रचना की उदात्त कल्पना थी। कवि का विश्वास था कि राम का सुयश ही उस पावन गंगा जल के समान है जो समस्त दुखों तथा दोषों का विनाश कर जीवन में आनन्द भर देता है। १

इस प्रकार राम के चरित्र गान से रहित सभी काव्य-रचना वायस तीर्थ के समान कही गई है। २ ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही कवि ने मंगल विधायक गणपति, कल्याण कर भगवान शंकर तथा दिव्य दृष्टि प्रदान करने वाले सद्गुरु की वन्दना करते हुये उन सबसे ऐसी विमल बुद्धि तथा व्यापक दृष्टि की याचना की है जिसे पाकर वह राम चरित्र का गान कर संसार शोक को दूर कर सके। ३ इस प्रकार राम चरित्र के गान में कवि ने जो महत्ता प्रतिष्ठित की है वही उसके महान् उद्देश्य का द्योतक है। कवि ने अपने आपको महाकवि तुलसीदास जी का अनुगामी स्वीकार किया है। जिससे यह सिद्ध होता कि उसने काव्यगत उद्देश्यों में उन्हें ही अपना प्रेरक माना था। अत: यदि हम यह कहें कि मध्य युगीन भक्ति आन्दोलन जो केवल धार्मिक या साम्प्रदायिक आन्दोलन न था अपितु एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा नवीन चेतना का आन्दोलन था तथा जिसके संचालक भक्त कवि थे, जिनमें महाकवि तुलसी दास जी मुख्य थे, के उदात्त सन्देश तथा महान् अभियान में प्राण फूंकने वाले उदात्त काव्यादर्शों को ही हमारे कवि ने स्वीकार किया था तो अनुचित न होगा।

सहजराम जी का कार्य काल यद्यपि रीतिकाल में आता है किन्तु काव्य चेतना में वे भक्ति काल से ही सम्बद्ध थे। फलत: श्रद्धा युक्त सेवा धर्म से समन्वित राम भक्ति ही उनके काव्य का विषय बनी जिसमें वैयक्तिक साधना के साथ साथ लोक हित की साधना सम्भव थी। इसप्रकार

१- रघुवंश दीपक - बालकाण्ड दोहा ४ से पूर्व की चौपाई -
' राम सुयश सुरसरि जल पावन। हरै दुरित दुख दोष नसावन।।
२- देखिये - रघुवंश दीपक की प्रारम्भिक वन्दना।
३- रघुवंश दीपक - उत्तर काण्ड, अन्तिम दोहा १७२।३
निज अनुगामी जानि के, स्वामी तुलसीदास।
सहजराम उर वास करि, कीन्हो ग्रन्थ प्रकाश।।

श्रद्धा और दास्य भावना से युक्त राम भक्ति की सम्प्राप्ति तथा आदर्श पर आधारित सुनियंत्रित लोक धर्म की प्रतिष्ठा ही वह महान उद्देश्य था जो रघुवंश दीपक में काव्य रूप में प्रकट हुआ है। यहां यह भी लक्ष्य कर लेना उचित ही होगा कि आलंकारिकों ने महाकाव्य का उद्देश्य चतुर्वर्ग की फल प्राप्ति माना है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुरुषार्थ चतुष्टय के रूप में रघुवंश दीपक की रचना के उद्देश्य भी हो सकते हैं। उसका प्रमाण यह है कि भक्तों ने राम भक्ति की प्राप्ति को ही सारे पुरुषार्थों की महान् उपलब्धि मानी है जो 'रघुवंश दीपक' में स्पष्टत: दिखाई देती है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उद्देश्य की दृष्टि से रघुवंश दीपक एक महाकाव्य ठहरता है।

नि ष्क र्ष

उपर्युक्त विवेचन के सम्यक अनुशीलन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि -

१- महाकाव्य सबंधी प्राचीन काव्य शास्त्रीय मान्यताओं के आधार पर भले ही 'रघुवंश दीपक' एक सफल महाकाव्य न ठहरता हो किन्तु एकाध बातों को छोड़कर शेष की कसौटी पर वह पौराणिक शैली का एक उत्तम प्रबन्ध काव्य अवश्य ठहरता है।

२- उसमें एक महान् और विस्तृत कथानक, महच्चरित्र एवम् उदात्त उद्देश्य स्पष्टत: दिखाई देता है। अत: रूढ़िगत मान्यताओं से हटकर कवि ने मौलिक चेतना के आधार पर रघुवंश दीपक को महाकाव्य-त्व प्रदान किया है ।

३-'रघुवंश दीपक' में सबंध निर्वाह की असफलता के कारण उसकी प्रबन्धात्मकता में दोष आ गया है। किन्तु महाकाव्य सम्बन्धी अन्य सभी विशेषतायें उसमें मिलती हैं । अस्तु भले ही उसे रामचरित मानस के स्तर का एक ' सफल महाकाव्य ' न कहा जा सके किन्तु प्रबन्ध काव्यों

की श्रेणी से उसे च्युत नहीं किया जा सकता ।

४-` रघुवंश दीपक ` में कवि की विराट चेतना तथा महाप्राणता ने युग जीवन के सन्दर्भ में मानव जीवन का समग्र चित्र प्रस्तुत किया है जिससे उसमें अनवरुद्ध जीवनी शक्ति तथा सशक्त प्राणवत्ता विद्यमान है। इस आधार पर वह एक महाकाव्य ठहरता है।

५-`रघुवंश दीपक ` में महा काव्य के लिये अपेक्षित औदात्त आत्म तत्व विद्यमान है। अत: उसे महाकाव्य न स्वीकार करना उसके साथ अन्याय होगा ।